

जन्मपत्री निर्माण और नक्षत्र-चरण आधारित भविष्यकथन की सटीकता का परीक्षण

(एक विश्लेषणात्मक, मापन-केंद्रित और साक्ष्य-आधारित अध्ययन)

Parhlad Singh Ahluwalia, Shodh Prakashan, Hisar, Haryana

सार (Abstract)

पृष्ठभूमि: भारतीय ज्योतिष-परंपरा में जन्मपत्री (जातक-कुंडली) का निर्माण जन्म-क्षण के गणितीय निर्धारण पर टिका है। इसमें लग्न, चंद्र-नक्षत्र, नक्षत्र-चरण (पाद), नवांश और विंशोत्तरी दशा की गणना होती है। फलकथन की विश्वसनीयता इन्हीं सूक्ष्म विभाजनों पर निर्भर बताई जाती है। इन दावों का परीक्षण दो अलग स्तरों पर होना चाहिए। पहला स्तर गणना की शुद्धता का है, दूसरा फलकथन की अनुभवजन्य सटीकता का।

उद्देश्य: (क) जन्मपत्री-निर्माण की गणितीय संरचना और उसके मापन-बिंदुओं का विश्लेषण करना; (ख) नक्षत्र-चरण आधारित भविष्यकथन की सटीकता पर उपलब्ध नियंत्रित अध्ययनों की संरचित समीक्षा करना; (ग) जन्म-समय की त्रुटि का वर्गीकरण-स्थिरता पर प्रभाव मापना; (घ) परीक्षण का एक पुनरुत्पादनीय प्रोटोकॉल प्रस्तावित करना।

विधि: PRISMA 2020 और PRISMA-ScR की पारदर्शिता-भावना पर आधारित एक प्रयोजनमूलक (purposive) संरचित समीक्षा की गई। इसमें 2024 तक प्रकाशित मुख्य परीक्षण-अध्ययनों का तुलनात्मक विश्लेषण हुआ। साथ ही लगभग चार लाख काल्पनिक जन्मों पर मोटे-काली अनुकरण चलाया गया, जिसमें अक्षांश 28.6° उत्तर (दिल्ली) लिया गया।

परिणाम: समीक्षित नियंत्रित अध्ययनों में, जहाँ भविष्यवाणी पहले से परिभाषित और जाँचने योग्य थी, ज्योतिषीय पद्धति की सटीकता संयोग-स्तर से सार्थक रूप से ऊपर नहीं मिली। अनुकरण दर्शाता है कि ± 15 मिनट की जन्म-समय त्रुटि पर लग्न-नवांश लगभग 54% मामलों में बदल जाता है। चंद्र-चरण लगभग 2% मामलों में बदलता है, और विंशोत्तरी दशा का आरंभ-समय प्रति घंटे की त्रुटि पर लगभग 3 से 10 माह खिसकता है।

निष्कर्ष: नक्षत्र-चरण आधारित फलकथन की सटीकता के पक्ष में अब तक का नियंत्रित साक्ष्य अपर्याप्त है। इसका अर्थ यह नहीं कि परंपरा सांस्कृतिक या मनोवैज्ञानिक कार्य नहीं करती, पर ये कार्य "भविष्यवाणी-सटीकता" से भिन्न हैं। अनुसंधान को पूर्व-पंजीकृत (pre-registered), द्वि-अंध (double-blind) और संभाव्यता-आधारित मूल्यांकन की ओर बढ़ना होगा।

कूट-शब्द: जन्मपत्री; नक्षत्र-चरण; नवांश; विंशोत्तरी दशा; भविष्यकथन की सटीकता; मिथ्याकरणीयता; PRISMA; मापन-त्रुटि

1. प्रस्तावना

मानव-सभ्यता ने आकाश को केवल देखा नहीं, उसे पढ़ने का प्रयास भी किया। भारतीय परंपरा में यह प्रयास "ज्योतिष" के नाम से वेदांग का रूप लेकर आया। वेदांग-ज्योतिष का एक प्रसिद्ध श्लोक गणित को सभी वेदांग-शास्त्रों के शिखर पर प्रतिष्ठित करता है:

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वद् वेदाङ्गशास्त्राणां गणितं मूर्धनि स्थितम्॥ [1]

इस श्लोक का सीधा अर्थ यह है कि गणना ज्योतिष की रीढ़ है। यदि गणना ही असंगत हो, तो उसके ऊपर खड़ा हुआ फलादेश-भवन स्वयं डगमगाएगा। इसी कारण इस शोध-पत्र का केंद्रीय प्रश्न दो स्तरों में बँटा है। पहला, जन्मपत्री-निर्माण की गणितीय प्रक्रिया कितनी स्थिर और पुनरुत्पादनीय है। दूसरा, उस पर आधारित नक्षत्र-चरण केंद्रित भविष्यकथन वास्तविकता से कितना मेल खाता है।

आधुनिक भारत में जन्मपत्री का प्रयोग विवाह-मेलापक, शिक्षा-चयन, व्यवसाय-आरंभ, नामकरण और स्वास्थ्य-चिन्ता जैसे अनेक निर्णयों में होता है। जब किसी विधि का प्रयोग इतने व्यापक जीवन-निर्णयों में होता है, तब उसकी सटीकता का परीक्षण केवल बौद्धिक कौतूहल नहीं रहता। वह सामाजिक उत्तरदायित्व बन जाता है। यदि कोई विधि सटीक है, तो उसे परीक्षण से भय नहीं होना चाहिए। यदि वह सटीक नहीं है, तो समाज को यह जानने का अधिकार है।

इस पत्र में "सटीकता" शब्द को तीन अर्थों में प्रयुक्त किया गया है:

1. **गणनात्मक सटीकता:** ग्रह-स्थिति, लग्न और नक्षत्र-चरण की गणना कितनी शुद्ध है।
2. **वर्गीकरण-स्थिरता:** इनपुट (जन्म-समय, स्थान) में छोटी त्रुटि होने पर निर्धारित वर्ग (चरण, नवांश, दशा) कितने बदलते हैं।
3. **पूर्वानुमान-वैधता:** कुंडली से निकाले गए कथन वास्तविक जीवन-घटनाओं से संयोग से अधिक मेल खाते हैं या नहीं।

यह वर्गीकरण महत्वपूर्ण है। परंपरा के समर्थक प्रायः पहले अर्थ की शुद्धता का उदाहरण देकर तीसरे अर्थ की वैधता मान लेते हैं। वे कहते हैं कि सूर्यसिद्धांत-आधारित गणना खगोलीय रूप से शुद्ध है, इसलिए फलादेश भी सही होगा। यह तर्क-दोष है। ग्रहण की भविष्यवाणी का सही होना यह सिद्ध नहीं करता कि व्यक्ति के व्यवसाय की भविष्यवाणी भी सही है। गणित की शुद्धता और फलकथन की वैधता दो भिन्न प्रश्न हैं, और प्रत्येक का परीक्षण अलग से अपेक्षित है।

शोध-अंतराल (Research Gap): हिंदी-माध्यम की शैक्षणिक चर्चा में प्रायः या तो श्रद्धा-आधारित प्रशंसा मिलती है या बिना विश्लेषण का खंडन। नक्षत्र-चरण (पाद) स्तर की सूक्ष्मता पर मापन-त्रुटि का परिमाणात्मक विश्लेषण और साथ में उपलब्ध परीक्षण-अध्ययनों की संरचित समीक्षा, दोनों का एकीकृत प्रस्तुतीकरण दुर्लभ है। प्रस्तुत पत्र इसी अंतराल को भरने का प्रयास है।

पत्र की रूपरेखा: खंड 2 में शास्त्रीय और सैद्धांतिक पृष्ठभूमि है। खंड 3 में शोध-प्रश्न और परिकल्पनाएँ हैं। खंड 4 में विधि, खंड 5 में परिणाम, खंड 6 में बहु-दृष्टिकोण विश्लेषण, खंड 7 में चर्चा, खंड 8 में सीमाएँ, खंड 9 में परीक्षण-प्रोटोकॉल और खंड 10 में निष्कर्ष है।

2. शास्त्रीय और सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

2.1 नक्षत्र-व्यवस्था का वैदिक और शास्त्रीय आधार

नक्षत्रों की सूची का प्राचीनतम व्यवस्थित रूप वैदिक संहिताओं में मिलता है। तैत्तिरीय संहिता में नक्षत्रों का उल्लेख उनके देवताओं के साथ हुआ है [2]। वेदांग-ज्योतिष इस आकाशीय पृष्ठभूमि का उपयोग कैलेंडर और यज्ञ-काल के निर्धारण के लिए करता है [1]। यहाँ एक ऐतिहासिक भेद ध्यान देने योग्य है। डेविड पिंघ्री जैसे इतिहासकारों के अनुसार वैदिक-कालीन ज्योतिष मुख्यतः पंचांग, काल-निर्धारण और शुभ-अशुभ मुहूर्त से संबद्ध था। जन्म-क्षण की राशि-लग्न-आधारित जातक-कुंडली का

विकसित रूप ईसा की आरंभिक शताब्दियों में, यूनानी-बाबिली संपर्कों के प्रभाव से विकसित हुआ [3,4]। इससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि परंपरा "विदेशी" होने के कारण अमान्य है। इतिहास-निर्धारण और वैधता-निर्धारण अलग प्रश्न हैं। पर यह तथ्य "वैदिक ज्योतिष" जैसे लोकप्रिय पदनाम की ऐतिहासिक सटीकता पर प्रश्नचिह्न अवश्य लगाता है।

2.2 गणितीय संरचना: राशि, नक्षत्र, चरण और नवांश

क्रांतिवृत्त (ecliptic) के 360° को 12 राशियों में बाँटने पर प्रत्येक राशि 30° की होती है। उसी वृत्त को 27 नक्षत्रों में बाँटने पर प्रत्येक नक्षत्र $13^\circ 20'$ (800 कला) का होता है। प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं, इसलिए एक चरण $3^\circ 20'$ (200 कला) का होता है। इस प्रकार कुल $27 \times 4 = 108$ चरण बनते हैं। एक राशि में ठीक नौ चरण आते हैं ($30^\circ \div 3^\circ 20' = 9$), इसी कारण चरण और नवांश एक-दूसरे से सीधे जुड़ते हैं।

चंद्रमा की औसत नाक्षत्र गति लगभग 13.176° प्रतिदिन है, अर्थात् लगभग 0.549° प्रति घंटा। अतः चंद्रमा औसतन एक चरण ($3^\circ 20'$) लगभग 6 घंटे 4 मिनट में पार करता है। चंद्रमा की वास्तविक गति कक्षा की उत्केंद्रता के कारण लगभग 11.8° से 15.4° प्रतिदिन के बीच बदलती रहती है। इसलिए एक चरण की अवधि लगभग 5.3 से 6.9 घंटे के बीच हो सकती है। यह तथ्य आगे के मापन-विश्लेषण के लिए आधार-बिंदु है। गणना-सिद्धांतों के रूप में सूर्यसिद्धांत जैसे ग्रंथ पारंपरिक आधार माने जाते हैं [5]।

उदय-लमन (आरोही बिंदु) पृथ्वी के घूर्णन के कारण लगभग हर दो घंटे में एक राशि बदलता है। इस प्रकार एक नवांश-लमन औसतन 13.3 मिनट में बदल जाता है। हमारे अनुकरण के अनुसार दिल्ली के अक्षांश पर नवांश की अवधि 9.3 से 15.6 मिनट के बीच रहती है। यहाँ से पहला मापन-निष्कर्ष निकलता है: **जो वर्गीकरण 13 मिनट में बदल जाता है, उसके लिए जन्म-समय का अभिलेख कुछ मिनटों की शुद्धता तक अपेक्षित है।**

2.3 विंशोत्तरी दशा और नक्षत्र-चरण

विंशोत्तरी दशा-पद्धति में कुल चक्र 120 वर्ष का है। इसमें नौ ग्रहों के क्रमशः केतु 7, शुक्र 20, सूर्य 6, चंद्र 10, मंगल 7, राहु 18, गुरु 16, शनि 19 और बुध 17 वर्ष निर्धारित हैं। जन्म के समय चंद्रमा जिस नक्षत्र में है, उसके स्वामी ग्रह की दशा से जीवन-क्रम आरंभ माना जाता है, और उस नक्षत्र में भोगे जा चुके अंश के अनुपात में शेष दशा निकाली जाती है। पराशर-परंपरा के ग्रंथ में यह पद्धति विस्तार से मिलती है [7]। यहाँ सटीकता का दूसरा संवेदनशील बिंदु है: चंद्रमा की स्थिति में छोटी त्रुटि पूरी जीवन-दशा-शृंखला का समय खिसका देती है।

जातक-शास्त्र का मूल दावा बृहज्जातक के एक प्रसिद्ध श्लोक में इस प्रकार व्यक्त होता है:

*यदुपचितमन्यजन्मनि शुभाशुभं तस्य कर्मणः पक्तिम्।
व्यञ्जयति शास्त्रमेतत् तमसि द्रव्याणि दीप इव॥* [6]

अर्थात् यह शास्त्र पूर्वजन्म में संचित शुभ-अशुभ कर्म के परिपाक को वैसे ही प्रकट करता है, जैसे अंधकार में दीपक वस्तुओं को प्रकट करता है। यह दावा दार्शनिक रूप से सुंदर है। पर वैज्ञानिक परीक्षण के लिए इसे इस रूप में बदलना पड़ता है कि "किसी दिए गए जन्म-क्षण की कुंडली से अमुक प्रकार की घटनाएँ संयोग से अधिक बार घटेंगी।" केवल इसी रूप में दावा जाँचा जा सकता है।

2.4 संस्कार-परंपरा का सामाजिक संदर्भ

भारतीय समाज में जन्म-संस्कार, नामकरण और अन्य संस्कार केवल धार्मिक क्रियाएँ नहीं हैं। वे सांस्कृतिक निरंतरता, पहचान-निर्माण और सामूहिक स्मृति के वाहक हैं। संस्कार, भाषा और संस्कृति के पारस्परिक संबंध पर समाजशास्त्रीय विश्लेषण इस बात को रेखांकित करते हैं कि परंपरागत अनुष्ठान सामाजिक संरचना को स्थिर रखने में भूमिका निभाते हैं [8–10]। इस दृष्टि से जन्मपत्री को केवल "भविष्यवाणी का उपकरण" मानना अधूरा होगा। वह एक सांस्कृतिक अभिलेख, पारिवारिक अनुष्ठान और सामाजिक अपेक्षाओं का सूत्र भी है। इस पत्र का उद्देश्य इस सांस्कृतिक भूमिका को नकारना नहीं है। उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि सांस्कृतिक कार्य की सार्थकता और पूर्वानुमान-सटीकता के दावे को एक-दूसरे में घुलाया नहीं जाना चाहिए।

2.5 वैज्ञानिक पद्धति: मिथ्याकरणीयता की कसौटी

कार्ल पॉपर ने किसी सिद्धांत के वैज्ञानिक होने की कसौटी यह बताई कि वह ऐसे कथन करे जिन्हें प्रयोग द्वारा गलत सिद्ध किया जा सके [11]। पॉल थैगार्ड ने ज्योतिष को छद्म-विज्ञान क्यों कहा जा सकता है, इस पर तर्क दिया। उनके अनुसार केवल जाँच-योग्यता नहीं, बल्कि सैद्धांतिक प्रगति का अभाव और वैकल्पिक व्याख्याओं की उपेक्षा भी कसौटी है [12]। इन दोनों विचारों को हम किसी पूर्वाग्रह के रूप में नहीं, एक पद्धतिगत कसौटी के रूप में अपनाते हैं। प्रश्न यह नहीं है कि ज्योतिष "विज्ञान" कहलाए या नहीं। प्रश्न यह है कि उसके विशिष्ट दावे जाँच-योग्य रूप में परखे गए हैं या नहीं, और परखे जाने पर क्या मिला।

3. शोध-प्रश्न और परिकल्पनाएँ

शोध-प्रश्न:

- **RQ1:** नक्षत्र-चरण और नवांश जैसे सूक्ष्म विभाजनों पर आधारित वर्गीकरण जन्म-समय की व्यावहारिक त्रुटियों के प्रति कितना स्थिर है?
- **RQ2:** नियंत्रित और अंध-परीक्षण स्थितियों में जन्मपत्री-आधारित भविष्यकथन की सटीकता संयोग-स्तर से कितनी भिन्न है?
- **RQ3:** ज्योतिषीय फलकथन की व्यक्तिगत "सटीकता-अनुभूति" के पीछे कौन-से संज्ञानात्मक और सामाजिक कारक हो सकते हैं?
- **RQ4:** एक पुनरुत्पादनीय और नैतिक परीक्षण-प्रोटोकॉल कैसा होना चाहिए?

परिकल्पनाएँ:

- **H0₁:** जन्म-समय की त्रुटि का नवांश/चरण-वर्गीकरण पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
- **H1₁:** ± 15 मिनट की त्रुटि पर लग्न-नवांश का वर्गीकरण अधिकांश मामलों में बदल जाता है।
- **H0₂:** नियंत्रित अंध-परीक्षणों में ज्योतिषियों की सही-मिलान दर संयोग-स्तर के बराबर है।
- **H1₂:** नियंत्रित अंध-परीक्षणों में ज्योतिषियों की सही-मिलान दर संयोग-स्तर से सार्थक रूप से अधिक है।

H1₂ के पक्ष में साक्ष्य मिलता तो परिकल्पना स्वीकार होती। अनुसंधान की निष्पक्षता इसी में है कि दोनों दिशाओं का परिणाम समान गंभीरता से लिया जाए।

4. शोध-विधि

4.1 समग्र डिजाइन

यह अध्ययन दो घटकों से बना है: (क) संरचित समीक्षा और (ख) मापन-त्रुटि का गणनात्मक अनुकरण। समीक्षा-घटक की रिपोर्टिंग में PRISMA 2020 के सिद्धांतों [21] और अन्वेषणात्मक (scoping) समीक्षाओं के लिए PRISMA-ScR के बिंदुओं [22] को मार्गदर्शक के रूप में लिया गया। इन दिशानिर्देशों का मूल उद्देश्य समीक्षा-प्रक्रिया को पारदर्शी, दोहराने योग्य और पक्षपात-न्यूनतम बनाना है।

महत्वपूर्ण स्पष्टीकरण (शोध-पारदर्शिता): इस पत्र में समीक्षा प्रयोजनमूलक (purposive) है। यहाँ उन अध्ययनों को चुना गया जो ज्योतिष-सटीकता पर प्रकाशित, समीक्षित और व्यापक रूप से उद्धृत नियंत्रित परीक्षण हैं। यह किसी बहु-डेटाबेस खोज का परिणाम नहीं है, इसलिए पूर्ण PRISMA प्रवाह-आरेख की संख्याएँ (पहचाने गए, छँटे गए, शामिल किए गए अभिलेख) यहाँ नहीं दी गई हैं। उन्हें गढ़ना अनुसंधान-नैतिकता के विरुद्ध होता। प्रकाशन से पूर्व वास्तविक डेटाबेस-खोज करने पर उन संख्याओं को इसी ढाँचे में जोड़ा जा सकता है (देखें खंड 8)।

4.2 पात्रता मानदंड

समावेशन:

1. ऐसे अध्ययन जो जन्म-तिथि/समय/स्थान पर आधारित किसी ज्योतिषीय दावे को अनुभवजन्य रूप से परखते हैं;
2. पूर्व-परिभाषित पूर्वानुमान या मिलान-कार्य वाले अध्ययन;
3. जिनमें संयोग-स्तर की स्पष्ट तुलना उपलब्ध हो;
4. प्रकाशन-वर्ष 2024 या उससे पूर्व।

बहिष्करण: व्यक्तिगत अनुभव-कथन, मीडिया-रिपोर्ट, बिना डेटा के वैचारिक लेख और अप्रकाशित सामग्री।

4.3 डेटा-निष्कर्षण के चर

प्रत्येक अध्ययन से ये बिंदु निकाले गए: (i) अध्ययन का प्रकार और नमूना, (ii) परीक्षित दावा, (iii) अंधीकरण की स्थिति, (iv) संयोग-आधार (chance baseline), (v) प्राप्त परिणाम, (vi) सीमाएँ। प्रभाव-आकार और सांख्यिकीय शक्ति की चर्चा में जैकब कोहेन के प्रभाव-आकार-ढाँचे को आधार बनाया गया [30]।

4.4 मापन-त्रुटि अनुकरण का डिजाइन

अनुकरण के चरण ये थे:

- स्थानीय नाक्षत्र-काल (sidereal time) का एक सम-वितरित यादृच्छिक मान "सही जन्म-क्षण" मानकर लिया गया।
- प्रत्येक मामले में आरोही-बिंदु (लग्न) की गणना क्रांतिवृत्त की तिर्यकता ($\epsilon = 23.4393^\circ$) और अक्षांश ϕ से मानक सूत्र द्वारा की गई।
- जन्म-समय में ± 8 मिनट की समान-वितरित त्रुटि जोड़ी गई और देखा गया कि लग्न-राशि, लग्न-नवांश और चंद्र-चरण बदलते हैं या नहीं।

- चंद्रमा की गति 11.8° से 15.4° प्रतिदिन के बीच समान-वितरित ली गई।
- प्रत्येक स्थिति में 4,00,000 काल्पनिक जन्म सिम्युलेट किए गए। अक्षांश 28.6° उ. (दिल्ली) मुख्य मान था और 19.1° उ. (मुंबई) पर पुष्टि-जाँच की गई।

मान्यताएँ: (अ) त्रुटि समान-वितरित है। (आ) लग्न और चंद्र-स्थिति पर त्रुटियाँ स्वतंत्र मानी गईं, जबकि वास्तव में दोनों एक ही जन्म-समय की त्रुटि से उत्पन्न होती हैं। (इ) अयनांश का केवल एक स्थिर विस्थापन माना गया, जो वर्गीकरण की अवधि को नहीं बदलता। यह अनुकरण मेरे द्वारा किया गया मौलिक गणनात्मक प्रदर्शन है। यह किसी प्रकाशित स्रोत का उद्धरण नहीं है, इसलिए इसे संदर्भ-संख्या नहीं दी गई।

4.5 मौलिकता और नैतिकता

इस पत्र का पाठ मौलिक रूप से लिखा गया है। शास्त्रीय श्लोकों के अतिरिक्त किसी स्रोत से वाक्य-स्तर पर पाठ नहीं लिया गया है। संदर्भित सामग्री केवल पुनर्कथित और उद्धृत है। प्रकाशन-पूर्व साहित्यिक-चोरी की जाँच के सुस्थापित तरीके और उपकरण उपलब्ध हैं और उनका प्रयोग अनुशंसित है [23]। चूँकि अध्ययन में मानवीय जन्म-विवरण का संभावित प्रयोग प्रस्तावित है, सामाजिक-विज्ञान अनुसंधान की नैतिक चिंताओं, जैसे सूचित सहमति, गोपनीयता और परिणाम-बोध के सामाजिक प्रभाव पर विचार आवश्यक है [24]।

5. परिणाम

5.1 समीक्षित अध्ययनों का तुलनात्मक सारांश

सबसे प्रभावशाली परीक्षणों में से एक शॉन कार्लसन का 1985 में *Nature* में प्रकाशित द्वि-अंध परीक्षण है [13]। इसमें लगभग तीस प्रतिष्ठित ज्योतिषियों से कहा गया कि वे प्रतिभागियों की जन्मपत्री का मिलान उनके मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व-प्रोफाइल से करें। ज्योतिषियों ने स्वयं इस परीक्षण-प्रारूप को निष्पक्ष स्वीकार किया था। सही चयन की दर लगभग उसी स्तर पर रही जो तीन विकल्पों में संयोग से अपेक्षित है, यानी लगभग एक-तिहाई।

जेफ़री डीन और इवान केली (2003) ने "समय-जुड़वाँ" (time twins) की अवधारणा पर आधारित विश्लेषण किया [14]। समय-जुड़वाँ वे व्यक्ति हैं जो कुछ ही मिनटों के अंतर से जन्मे और जिनकी जन्मपत्री लगभग समान होनी चाहिए। लगभग दो हजार व्यक्तियों में 110 से अधिक चरों, जैसे बुद्धि, व्यक्तित्व, व्यवसाय और वैवाहिक स्थिति, पर तुलना करने पर समय-जुड़वाँ अन्य व्यक्तियों की तुलना में अधिक समान नहीं मिले। यह परीक्षण इसलिए विशेष महत्व रखता है कि इसमें कुंडली की "व्याख्या" की व्यक्तिपरकता का प्रश्न ही नहीं उठता। जन्म-क्षण के समान होने से परिणाम समान होने चाहिए थे, पर नहीं मिले।

भारतीय संदर्भ में नरलीकर और सहयोगियों का 2009 का परीक्षण उल्लेखनीय है [15]। इसमें लगभग 200 कुंडलियाँ (मेधावी और बौद्धिक रूप से चुनौतीग्रस्त विद्यार्थियों की) संग्रहित की गईं। ज्योतिषियों को 40 कुंडलियों के समूह दिए गए और उन्हें दोनों श्रेणियों में अलग करना था। उत्तीर्ण होने की सीमा 40 में से कम से कम 28 सही वर्गीकरण (70%) रखी गई थी। परीक्षण-रिपोर्टों के अनुसार कोई भी ज्योतिषी इस सीमा तक नहीं पहुँचा। इस अध्ययन की ताकत यह थी कि प्रश्न केंद्रित था और व्याख्या की अस्पष्टता न्यूनतम थी।

पीटर हार्टमैन, मार्टिन रॉयटर और हेलो न्यबोर्ग (2006) ने जन्म-तिथि और व्यक्तित्व/सामान्य बुद्धि के संबंध का बड़े नमूनों पर परीक्षण किया और कोई सार्थक संबंध नहीं पाया [16]। डेविड वोआस (2008) ने इंग्लैंड और वेल्स की 2001 की जनगणना के लगभग एक करोड़ विवाहों के आँकड़ों से देखा कि क्या राशि-आधारित अनुकूलता विवाह-चयन में दिखती है। यदि कोई प्रभाव

दिखा भी तो वह व्यावहारिक दृष्टि से नगण्य था [17]। इवान केली (1997) ने आधुनिक ज्योतिष-साहित्य की आलोचनात्मक समीक्षा में निष्कर्ष निकाला कि दावों के पक्ष में ठोस अनुभवजन्य समर्थन का अभाव है [18]।

सभी अध्ययन नकारात्मक नहीं रहे। मेयो, व्हाइट और आइज़ेक (1978) ने लगभग 2,324 बच्चों में सूर्य-राशि और बहिर्मुखता के बीच सहसंबंध पाया [19]। पर बाद के अध्ययनों में यह प्रभाव मुख्यतः उन प्रतिभागियों तक सीमित दिखा जिन्हें ज्योतिष का ज्ञान था, जो स्व-आरोपण (self-attribution) की व्याख्या की ओर संकेत करता है [20]। अर्थात् व्यक्ति अपनी राशि-छवि को जानकर स्वयं को उसी के अनुरूप वर्णित करने लगता है। इसमें खगोलीय प्रभाव का प्रमाण नहीं, सामाजिक-मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया का प्रमाण है।

तालिका 1: समीक्षित प्रमुख अध्ययनों का तुलनात्मक सारांश

क्र.	अध्ययन (संदर्भ)	डिज़ाइन / परीक्षित दावा	नमूना / मापदंड	मुख्य परिणाम	टिप्पणी
1	Carlson, 1985 [13]	द्वि-अंध; कुंडली का व्यक्तित्व-प्रोफ़ाइल से मिलान	लगभग 30 ज्योतिषी; 3 विकल्प (संयोग $\approx 33\%$)	सही-मिलान दर संयोग के निकट ($\approx$ एक-तिहाई)	ज्योतिषियों ने प्रारूप पूर्व-स्वीकृत किया
2	Dean & Kelly, 2003 [14]	"समय-जुड़वाँ"; समान जन्म-क्षण वालों की समानता	$\approx 2,000$ व्यक्ति; 110+ चर	समय-जुड़वाँ अन्य से अधिक समान नहीं	कुंडली-व्याख्या की व्यक्तिपरकता निरस्त
3	Narlikar et al., 2009 [15]	मेधावी बनाम चुनौतीग्रस्त विद्यार्थियों की कुंडली का पृथक्करण	≈ 200 कुंडलियाँ; 40 के समूह; उत्तीर्ण-सीमा $\geq 28/40$	कोई ज्योतिषी सीमा तक नहीं पहुँचा	भारतीय संदर्भ; केंद्रित प्रश्न
4	Hartmann et al., 2006 [16]	जन्म-तिथि बनाम व्यक्तित्व/बुद्धि	बड़े जनसंख्या-नमूने	कोई सार्थक संबंध नहीं	बड़ी सांख्यिकीय शक्ति
5	Voas, 2008 [17]	राशि-आधारित विवाह-चयन	≈ 1 करोड़ विवाह (जनगणना)	व्यावहारिक प्रभाव नगण्य	जनसंख्या-स्तरीय आँकड़े
6	Kelly, 1997 [18]	आलोचनात्मक साहित्य-समीक्षा	बहु-अध्ययन	अनुभवजन्य समर्थन का अभाव	समीक्षा-आधारित निष्कर्ष
7	Mayo et al., 1978 [19]	सूर्य-राशि बनाम बहिर्मुखता	$\approx 2,324$ बच्चे	सहसंबंध दिखा	ज्योतिष-ज्ञान वाले समूह में सीमित
8	Clarke et al., 1996 [20]	राशि बनाम व्यक्तित्व-लक्षण (पुनरीक्षण)	अनुभवजन्य नमूना	प्रभाव ज्योतिष-ज्ञान पर निर्भर	स्व-आरोपण की व्याख्या

तालिका टिप्पणी: संख्याएँ मूल प्रकाशनों के सार-स्तरीय विवरण हैं। प्रकाशन से पूर्व प्रत्येक आँकड़ा मूल लेख से मिलाकर सत्यापित करें।

तालिका 1 का संश्लेषण: आठ में से छह अध्ययन संयोग-स्तर से ऊपर कोई मज़बूत प्रभाव नहीं दिखाते। शेष दो में एक अल्प-आकार का सहसंबंध दिखा, जिसे सामाजिक-मनोवैज्ञानिक कारकों से समझाया गया। समग्र पैटर्न दिशा-निरपेक्ष है, यानी साक्ष्य "विरोधाभासी" नहीं है। जहाँ पद्धति कठोर हुई, वहाँ प्रभाव घटा या विलुप्त हुआ।

5.2 मापन-त्रुटि अनुकरण के परिणाम

तालिका 2: जन्म-समय त्रुटि के कारण वर्गीकरण-परिवर्तन की संभावना (अनुकरण, अक्षांश 28.6° उ., 4,00,000 जन्म प्रति स्थिति)

जन्म-समय त्रुटि (±मिनट)	लग्न-नवांश बदलने की संभावना (%)	लग्न-राशि बदलने की संभावना (%)	चंद्र-चरण बदलने की संभावना (%)
±1	3.7	—	—
±5	18.7	2.1	0.7
±10	37.6	—	—
±15	54.3	6.3	2.1
±30	77.2	12.6	4.2
±60	—	—	8.5

(— = उस स्थिति की गणना नहीं की गई अक्षांश 19.1° उ. पर लग्न-नवांश के परिणाम इन मानों से 1 प्रतिशत-बिंदु के भीतर रहे।)

मुख्य अवलोकन:

1. **लग्न-नवांश सबसे संवेदनशील है।** केवल ±5 मिनट की त्रुटि पर लगभग हर पाँच में से एक कुंडली का लग्न-नवांश बदल जाता है। ±15 मिनट पर यह अनुपात आधे से अधिक हो जाता है। यह अपेक्षित ही था, क्योंकि नवांश की औसत अवधि केवल 13.3 मिनट है।
2. **चंद्र-चरण अपेक्षाकृत स्थिर है।** चंद्रमा धीरे चलता है, इसलिए ±15 मिनट की त्रुटि पर चरण बदलने की संभावना लगभग 2% है। परंतु यह स्थिरता केवल एक आंशिक राहत है, क्योंकि दशा-गणना (नीचे देखें) में छोटी त्रुटि भी समय खिसका देती है।
3. **स्वतंत्रता मानकर संयुक्त जोखिम:** यदि फलादेश लग्न-नवांश और चंद्र-चरण दोनों पर निर्भर है, तो ±15 मिनट की त्रुटि पर कम से कम एक का बदलना लगभग $1 - (1 - 0.543)(1 - 0.0213) \approx 55\%$ होगा (स्वतंत्रता की मान्यता पर)।

5.3 विंशोत्तरी दशा की संवेदनशीलता का विश्लेषण

यदि चंद्रमा की स्थिति में Δ अंश की त्रुटि हो, तो दशा-शेष में त्रुटि = $\Delta \times (\text{नक्षत्र-स्वामी की दशा-वर्ष} \div 13.33^\circ)$ वर्ष होगी। चंद्रमा औसतन 0.549° प्रति घंटा चलता है। इसलिए **एक घंटे की जन्म-समय त्रुटि** से दशा का आरंभ-समय इतना खिसकता है:

- सूर्य (6 वर्ष) नक्षत्र: लगभग 0.25 वर्ष (≈ 3 माह)
- केतु और मंगल (7 वर्ष): ≈ 0.29 वर्ष (≈ 3.5 माह)
- चंद्र (10 वर्ष): ≈ 0.41 वर्ष (≈ 5 माह)
- गुरु (16 वर्ष): ≈ 0.66 वर्ष (≈ 8 माह)
- बुध (17 वर्ष): ≈ 0.70 वर्ष (≈ 8.4 माह)
- राहु (18 वर्ष): ≈ 0.74 वर्ष (≈ 8.9 माह)

- शनि (19 वर्ष): ≈ 0.78 वर्ष (≈ 9.4 माह)
- शुक्र (20 वर्ष): ≈ 0.82 वर्ष (≈ 9.9 माह)

यह एक सरल रैखिक गणना है, जिसमें चंद्रमा की औसत गति ली गई है। निष्कर्ष स्पष्ट है। जब किसी फलकथन में "अगली दशा में अमुक घटना, अमुक वर्ष के अमुक माह में" जैसी समय-विशिष्ट बात कही जाती है, तब जन्म-समय की एक घंटे की त्रुटि का प्रभाव लगभग 3 से 10 माह के विस्थापन के बराबर हो सकता है। सामान्यतः हस्तलिखित या अस्पताल-अभिलेखों में जन्म-समय पूर्णांक मिनट या निकटतम कुछ मिनट पर दर्ज होता है, और कई बार सटीक पर्यवेक्षण का अभाव रहता है। इसलिए उपर्युक्त त्रुटि-स्तर किसी काल्पनिक चरम का नहीं, बल्कि व्यावहारिक संभावना का वर्णन करते हैं।

5.4 परिणामों का समेकित अर्थ

ये दोनों परिणाम-समूह दो अलग प्रकार की बातें कहते हैं। अनुकरण यह दिखाता है कि **भले ही** नवांश/चरण-आधारित फलकथन सैद्धांतिक रूप से वैध हो, उसकी व्यावहारिक प्रयोज्यता जन्म-समय के अभिलेख की शुद्धता से सीमित है। समीक्षित अध्ययन यह दिखाते हैं कि जब त्रुटि न्यूनतम रखकर भी परीक्षण हुआ, जैसे समय-जुड़वाँ अध्ययन में, तब भी पूर्वानुमान-वैधता प्रकट नहीं हुई। दोनों निष्कर्ष एक-दूसरे को सुदृढ़ करते हैं, लेकिन तर्कतः स्वतंत्र हैं।

6. विश्लेषण: विविध दृष्टिकोणों से

6.1 वैज्ञानिक और सांख्यिकीय दृष्टिकोण

(क) भविष्यवाणी का मूल्यांकन कैसे हो। भविष्यकथन-सटीकता मापने के लिए पूर्व-परिभाषित, स्पष्ट और जाँच-योग्य कथन चाहिए। फिलिप टेटलॉक के बहुचर्चित दीर्घकालीन अध्ययन में 284 विशेषज्ञों के 28,000 से अधिक पूर्वानुमानों का आकलन हुआ, और अनेक क्षेत्रों में विशेषज्ञ-निर्णय सरल सांख्यिकीय आधार-रेखाओं से बहुत बेहतर नहीं पाए गए [28]। इसका सबक सीधा है: विशेषज्ञता की भावना और पूर्वानुमान-सटीकता, दोनों भिन्न चीजें हैं। इसलिए किसी भी भविष्यकथन-परंपरा के मूल्यांकन में अनुभव-वर्षों की संख्या प्रमाण नहीं मानी जा सकती। प्रमाण वही है जो पूर्व-घोषित पूर्वानुमान के बाद मापे गए परिणामों से निकले।

(ख) संभाव्यता-आधारित मूल्यांकन। ज्योतिषीय कथन प्रायः अनिश्चित भाषा में आते हैं, जैसे "इस अवधि में संघर्ष संभव है।" ऐसे कथनों की जाँच के लिए ब्रायर-स्कोर जैसे उचित स्कोरिंग-नियम उपयोगी हैं, जो पूर्वानुमानित संभावना और वास्तविक परिणाम के अंतर को मापते हैं [29]। यदि ज्योतिषी हर कथन के साथ प्रतिशत-संभावना देने को तैयार हों, तो उनकी "अंशांकन-क्षमता" (calibration) वस्तुनिष्ठ रूप से जाँची जा सकती है। अब तक के अधिकांश दावे इस रूप में रखे ही नहीं गए, जो अपने-आप में एक पद्धतिगत कमी है।

(ग) प्रभाव-आकार और सांख्यिकीय शक्ति। कोहेन का ढाँचा सिखाता है कि किसी भी परीक्षण में पहले से तय हो कि कितना प्रभाव "सार्थक" माना जाएगा और उसे पकड़ने के लिए कितना नमूना चाहिए [30]। नरलीकर-परीक्षण में 70% की उत्तीर्ण-सीमा ज्योतिषी-पक्ष की अपनी अपेक्षा के अनुरूप तय की गई थी [15]। यह पद्धतिगत रूप से उचित कदम है, क्योंकि इससे परीक्षण "जीत-हार का समझौता" बन जाता है, जिसे बाद में पलटा नहीं जा सकता।

(घ) "नकारात्मक परिणाम" की व्याख्या। यह तर्क दिया जाता है कि परीक्षण में भाग लेने वाले ज्योतिषी अक्षम थे। नरलीकर-परीक्षण पर यह प्रतिक्रिया दर्ज हुई थी, और परीक्षकों के अनुसार एक ज्योतिष-संस्था के भाग लेने पर भी परिणाम वही रहा। यहाँ

एक तार्किक सिद्धांत लागू होता है: यदि विधि केवल कुछ चुनिंदा व्यक्तियों के हाथ में काम करती है, और उन व्यक्तियों की पहचान पहले से परखी नहीं जा सकती, तो वह विधि सामाजिक रूप से उपयोगी नहीं कही जा सकती।

6.2 शास्त्रीय और दार्शनिक दृष्टिकोण

परंपरा स्वयं "दैव" और "पुरुषकार" के संबंध पर गहरा चिंतन करती है। भगवद्गीता में कर्म-सिद्धि के पाँच कारणों में "दैव" को पाँचवाँ स्थान दिया गया है:

*अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम्।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम्॥* (भगवद्गीता 18.14) [31]

यहाँ "दैव" पाँच कारणों में एक है, अकेला निर्णायक नहीं। उसी गीता का केंद्रीय उपदेश कर्म-निष्ठा का है: "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" (गीता 2.47) [31]। याज्ञवल्क्य स्मृति का प्रसिद्ध वचन भी इसी संतुलन की ओर इंगित करता है:

*यथा ह्येकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत्।
एवं पुरुषकारेण विना दैवं न सिध्यति॥* (याज्ञवल्क्य स्मृति 1.349)

यहाँ दैव-रूपी एक पहिये के साथ पुरुषकार-रूपी दूसरा पहिया आवश्यक माना गया है। इन वचनों से तीन बातें निकलती हैं। पहली, परंपरा का सर्वोत्तम भाग भाग्य-निर्भरता का नहीं, कर्म-उत्तरदायित्व का पक्षधर है। दूसरी, जब कोई कुंडली-आधारित कथन व्यक्ति को निष्क्रियता की ओर धकेलता है, वह परंपरा के अपने मूल स्वर के भी विपरीत है। तीसरी, शास्त्रीय दृष्टि का सम्मान करने का अर्थ अनुभवजन्य परीक्षण से बचना नहीं है। भारतीय चिंतन में प्रत्यक्ष और अनुमान जैसे प्रमाण-सिद्धांतों की लंबी परंपरा है, और उसी पर चलते हुए फलकथन को भी प्रत्यक्ष-जाँच के लिए खोलना स्वयं परंपरा के अनुकूल है।

यह भी उल्लेखनीय है कि बृहज्जातक का उद्धाटन-श्लोक [6] कर्म-फल के "परिपाक" की बात करता है। यह दावा सीधे तौर पर नक्षत्र-चरण के तीन अंश या एक-एक नवांश के निर्णायक होने का नहीं है। सूक्ष्म विभाजनों पर इतना अधिक बल बाद के विकास की प्रवृत्ति है। इसलिए "शास्त्र-सम्मत" और "व्यवहार में प्रचलित" का अंतर समझना आवश्यक है।

6.3 मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण: "सटीक लगने" की अनुभूति

एक बहुत सामान्य अनुभव है कि कुंडली-पाठ "बिल्कुल मेरे ही बारे में" लगता है। बर्ट्रैंड फ़ोरर के 1949 के प्रसिद्ध प्रयोग में विद्यार्थियों को व्यक्तित्व-विवरण दिया गया, जिसे प्रत्येक विद्यार्थी ने "व्यक्तिगत" समझा। असल में सभी को एक ही सामान्य विवरण दिया गया था। विद्यार्थियों ने उसे औसतन लगभग 4.26 अंक (पाँच में से) की सटीकता दी [25]। डिक्सन और केली की समीक्षा ने "बार्नम-प्रभाव" को व्यापक रूप से पुष्ट किया: सामान्य, सकारात्मक और अस्पष्ट कथन अधिकांश लोगों को व्यक्तिगत रूप से सटीक लगते हैं [26]।

साथ ही, ट्वर्स्की और काह्नेमन के शोध ने दिखाया कि अनिश्चितता में मानव-निर्णय किन अनुमान-विधियों (heuristics) से संचालित होता है और उनमें कैसे व्यवस्थित त्रुटियाँ घुसती हैं [27]। इसके कई रूप ज्योतिषीय अनुभव में पहचाने जा सकते हैं:

- **चयनात्मक स्मृति:** जो भविष्यवाणी सही निकली वह याद रहती है, गलत भुला दी जाती है।
- **उपलब्धता-अनुमान:** हाल की या भावनात्मक घटनाएँ भविष्यवाणी से जोड़ ली जाती हैं।
- **पुष्टि-पक्षपात:** अनुकूल प्रमाण खोजे जाते हैं, प्रतिकूल उपेक्षित हो जाते हैं।

- **पञ्चदृष्टि की व्याख्या:** घटना के बाद कुंडली की "व्याख्या" इस प्रकार बैठाई जाती है कि वह पहले से उसे दर्शाती प्रतीत हो।

इन प्रक्रियाओं के कारण "मेरे अनुभव में यह सही निकला" एक भावनात्मक रूप से सच्चा, पर साक्ष्य के रूप में कमजोर कथन है। यहाँ ज्योतिषियों की ईमानदारी पर प्रश्न नहीं है। यह मानव-संज्ञान की सामान्य विशेषता है, जो चिकित्सकों, निवेशकों और वैज्ञानिकों पर भी लागू होती है। इसी कारण द्वि-अंध डिजाइन आवश्यक है।

6.4 समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

जन्मपत्री का सामाजिक अस्तित्व उसकी भविष्यवाणी-क्षमता से स्वतंत्र है। वह पारिवारिक विमर्श का माध्यम है। वह विवाह-संबंधों की प्रारंभिक छँटाई का तंत्र है। वह जीवन-संक्रमणों (जन्म, विवाह, गृह-प्रवेश) में सामूहिक अनुष्ठान का अवसर देती है। संस्कार, भाषा और संस्कृति के अंतर्संबंध पर समाजशास्त्रीय विश्लेषण बताते हैं कि अनुष्ठान-आधारित व्यवहार सांस्कृतिक पहचान की निरंतरता में योगदान देते हैं [8-10]। अतः यदि जन्मपत्री का पूर्वानुमान-दावा अनुभवजन्य रूप से समर्थित न हो, तब भी उसका सांस्कृतिक कार्य मौजूद रह सकता है।

परंतु सामाजिक पक्ष का एक जोखिम-पक्ष भी है। जब जन्मपत्री विवाह-निर्णय में वीटो की तरह प्रयुक्त होती है, तो "मंगल-दोष" जैसी धारणाएँ व्यक्तियों के जीवन-अवसर को सीमित कर सकती हैं। एक ऐसा मानदंड, जिसकी पूर्वानुमान-वैधता का साक्ष्य कमजोर है, जब वास्तविक जीवन-निर्णयों का आधार बन जाए, तो उसके सामाजिक मूल्य की खुली और ईमानदार समीक्षा आवश्यक हो जाती है।

गांधी-चिंतन पर उपलब्ध अध्ययन जीवन-मूल्यों, नैतिकता और जीवन-कौशल को शिक्षा और व्यक्तित्व-निर्माण का आधार बताते हैं [32,33]। इस परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति के निर्णय-कौशल, आत्म-अनुशासन और नैतिक आत्म-निर्भरता का विकास, किसी भी बाह्य "संकेत-प्रणाली" पर पूर्ण निर्भरता की तुलना में अधिक स्थायी आधार देता है। ऐसे मूल्यों को ज्योतिष-विरोधी तर्क के रूप में नहीं, बल्कि निर्णय-प्रक्रिया के पूरक आधार के रूप में देखना चाहिए।

6.5 संस्थागत गुणवत्ता-आश्वासन की सादृश्यता

एक उपयोगी पद्धतिगत सादृश्य भारतीय उच्च-शिक्षा में प्रत्यायन-व्यवस्था से लिया जा सकता है। राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन व्यवस्था पर उपलब्ध अध्ययन गुणवत्ता-संकेतकों, परिणाम-आधारित मूल्यांकन और बाह्य सत्यापन की भूमिका पर विचार करते हैं [34-41]। इन अध्ययनों का विषय ज्योतिष नहीं है, इसलिए इनसे ज्योतिष के बारे में कोई प्रत्यक्ष निष्कर्ष नहीं निकाला जा रहा। जो सादृश्य सार्थक है, वह यह है कि जहाँ भी समाज किसी प्रणाली पर भरोसा करता है, वहाँ उसकी गुणवत्ता का दावा संस्था के स्व-कथन से नहीं, बल्कि पूर्व-निर्धारित संकेतकों और स्वतंत्र बाह्य सत्यापन से परखा जाता है। इसी तर्क से ज्योतिषीय सेवाओं की सटीकता का भी, चाहे वह किसी भी परंपरा की हों, स्वतंत्र और पूर्व-घोषित मानदंडों पर मूल्यांकन उचित है। "परिणाम-आधारित सत्यापन" की यह अवधारणा किसी विशेष संस्कृति की नहीं, विश्वसनीयता-निर्धारण का सार्वभौमिक सिद्धांत है।

6.6 नैतिक दृष्टिकोण

फलकथन करने वाले व्यक्ति और सुनने वाले व्यक्ति के बीच सूचना-विषमता होती है। जब कोई जातक चिंता की स्थिति में परामर्श लेता है, तब उसकी निर्णय-स्वायत्तता प्रभावित हो सकती है। अतः नैतिक प्रश्न तीन हैं। क्या परामर्शदाता अपनी विधि की सीमाओं का स्पष्ट उल्लेख करता है? क्या स्वास्थ्य, विधि और वित्त जैसे उच्च-जोखिम निर्णयों में योग्य विशेषज्ञ का स्थान ज्योतिषीय कथन

नहीं लेता? क्या भय-आधारित कथन (जैसे अनिष्ट की निश्चित भविष्यवाणी) से बचा जाता है? सामाजिक-विज्ञान अनुसंधान की नैतिकता का मूल सिद्धांत, कि किसी को हानि न पहुँचे और जानकारी-आधारित सहमति हो, इस संदर्भ में भी लागू होता है [24]।

7. चर्चा

7.1 निष्कर्षों का संश्लेषण

समग्र चित्र चार बिंदुओं में समेटा जा सकता है। पहला, **गणना-स्तर पर** आधुनिक खगोल-गणित यह तय कर सकता है कि किसी क्षण चंद्रमा किस नक्षत्र-चरण में है, इसमें कोई विवाद नहीं। दूसरा, **इनपुट-स्तर पर** जन्म-समय की व्यावहारिक अशुद्धियाँ सूक्ष्म वर्गीकरणों (नवांश, चरण, दशा-आरंभ) को अस्थिर बनाती हैं। तीसरा, **पूर्वानुमान-स्तर पर** नियंत्रित परीक्षणों में सटीकता संयोग से सार्थक रूप से ऊपर नहीं पाई गई [13–18]। चौथा, **अनुभव-स्तर पर** लोगों को जो सटीकता "अनुभव" होती है, उसके लिए ज्ञात मनोवैज्ञानिक तंत्र पर्याप्त व्याख्या देते हैं [25–27]।

7.2 संभावित आपत्तियाँ और उनका उत्तर

आपत्ति 1: "परीक्षण-पद्धतियाँ ज्योतिष की प्रकृति के अनुकूल नहीं थीं।" यह एक गंभीर आपत्ति है और इसे खारिज नहीं करना चाहिए। उत्तर यह है कि कार्लसन के परीक्षण का प्रारूप ज्योतिषियों से पूर्व-स्वीकृत था [13]। समय-जुड़वाँ अध्ययन में तो कुंडली-व्याख्या की आवश्यकता ही नहीं पड़ी [14]। फिर भी, भविष्य के परीक्षणों में ज्योतिषी-पक्ष की सहभागिता से परीक्षण-प्रारूप तय करना सबसे विश्वसनीय मार्ग है।

आपत्ति 2: "ज्योतिष सांख्यिकीय नहीं, व्यक्तिगत स्तर पर कार्य करता है।" यदि कोई विधि व्यक्तिगत स्तर पर कार्य करती है, तो पर्याप्त व्यक्तियों पर दोहराने से वह सांख्यिकीय रूप से दिखनी चाहिए। "सांख्यिकी से परे" का तर्क अपरीक्षणीय बना देता है, जो मिथ्याकरणीयता की कसौटी पर विधि को कमजोर करता है [11,12]।

आपत्ति 3: "अनुभव में लोग लाभान्वित होते हैं।" यह संभव है और इस पत्र में अस्वीकार नहीं किया गया। परामर्श-संवाद का मनोवैज्ञानिक लाभ, सामाजिक समर्थन और अनुष्ठान से प्राप्त आश्वासन वास्तविक हो सकते हैं। परंतु लाभ का स्रोत "ग्रह-स्थिति की भविष्यसूचक शक्ति" है या "परामर्श की मानवीय प्रकृति", यह परीक्षण-योग्य प्रश्न है, जिसे अनुमान से नहीं सुलझाया जा सकता।

आपत्ति 4: "जन्म-समय त्रुटि का तर्क दोधारी है।" यह भी सही है। यदि कोई कहे कि सटीकता इसलिए नहीं मिलती कि जन्म-समय अशुद्ध है, तो वह स्वयं मान रहा है कि सूक्ष्म वर्गीकरण-आधारित फलकथन व्यवहार में अविश्वसनीय है। यह समर्थक का तर्क नहीं, आलोचक का ही तर्क बन जाता है। इसका एकमात्र कसौटी-योग्य समाधान यह है कि अति-शुद्ध (जैसे मशीन-अभिलिखित) जन्म-समय वाले नमूने पर परीक्षण किया जाए।

7.3 सकारात्मक संभावनाएँ

इस विश्लेषण का उद्देश्य परंपरा का उपहास नहीं है। इसके सकारात्मक आयाम ये हैं:

- ज्योतिषीय खगोल-गणित (पंचांग-गणना) का ऐतिहासिक महत्व है। कैलेंडर और काल-निर्धारण में उसकी भूमिका ऐतिहासिक रूप से सुस्थापित है [1,3,5]।
- जातक-परंपरा के सांस्कृतिक और सामाजिक कार्य अध्ययन-योग्य हैं [8–10]।

- ज्योतिषियों की भागीदारी वाले, सह-डिजाइन किए गए परीक्षण परंपरा के लिए भी विश्वसनीयता का मार्ग खोल सकते हैं।

8. अध्ययन की सीमाएँ

- **समीक्षा का प्रयोजनमूलक स्वरूप:** समीक्षा पूर्ण बहु-डेटाबेस खोज पर आधारित नहीं है। चयन-पक्षपात की संभावना है, यद्यपि चयन-मानदंड स्पष्ट रखे गए हैं।
- **भारतीय-पद्धति पर सीमित प्रत्यक्ष साक्ष्य:** अधिकांश नियंत्रित अध्ययन पश्चिमी सूर्य-राशि आधारित हैं। नक्षत्र-चरण स्तर पर विशेष रूप से डिजाइन किए गए बड़े भारतीय परीक्षण बहुत कम हैं। अतः "नक्षत्र-चरण" पर निष्कर्ष आंशिक रूप से अन्य पद्धतियों के साक्ष्य से अनुमानित हैं।
- **अनुकरण की मान्यताएँ:** समान-वितरित त्रुटि, लग्न और चंद्र-त्रुटि की स्वतंत्रता और चंद्र-गति का समान-वितरण, ये सब सरलीकरण हैं। वास्तविक अभिलेखों में त्रुटि का वितरण भिन्न हो सकता है।
- **नमूना और संदर्भ:** तालिका 1 के कुछ संख्यात्मक विवरण द्वितीयक स्रोतों के सार-स्तर पर आधारित हैं और प्रकाशन से पूर्व मूल लेखों से मिलाए जाने चाहिए।
- **उपलब्ध संस्थागत साहित्य की प्रकृति:** खंड 6.5 में प्रयुक्त प्रत्यायन-संबंधी अध्ययन सादृश्य के रूप में लिए गए हैं। वे ज्योतिष-विषयक साक्ष्य नहीं हैं।
- **समय-सीमा:** केवल 2024 तक के साहित्य का प्रयोग हुआ, इसलिए उसके बाद के अध्ययन इसमें शामिल नहीं हैं।

9. प्रस्तावित परीक्षण-प्रोटोकॉल

भविष्य के अनुसंधान को विश्वसनीय बनाने के लिए निम्न प्रोटोकॉल प्रस्तावित है:

चरण 1: पूर्व-पंजीकरण। परिकल्पना, नमूना-आकार, सफलता-मानदंड और विश्लेषण-योजना परीक्षण से पहले सार्वजनिक रूप से दर्ज हों।

चरण 2: ज्योतिषी-पक्ष की सहमति। सहभागी ज्योतिषी परीक्षण-प्रारूप से पूर्व सहमत हों, ताकि "प्रारूप अनुचित था" वाली आपत्ति बाद में न उठे। कार्लसन के प्रारूप में इसी पद्धति का प्रयोग हुआ था [13]।

चरण 3: उच्च-शुद्धता जन्म-डेटा। केवल उन जन्मों को लिया जाए जिनका समय यंत्र-अभिलिखित हो और जिनमें त्रुटि ± 1 मिनट से कम हो। खंड 5.2 के अनुसार इस स्थिति में भी लग्न-नवांश लगभग 3.7% मामलों में बदलेगा, और इसे विश्लेषण में दर्ज किया जाए।

चरण 4: द्वि-अंश मिलान। न परीक्षक को ज्योतिषी का उत्तर पता हो, न ज्योतिषी को वास्तविक उत्तर। मिलान-कार्य में स्पष्ट श्रेणियाँ हों।

चरण 5: संभाव्यता-आधारित उत्तर। ज्योतिषी प्रत्येक कथन के साथ विश्वास-प्रतिशत दें, और मूल्यांकन ब्रायर-स्कोर जैसे उचित स्कोरिंग-नियम से हो [29]।

चरण 6: पर्याप्त शक्ति। नमूना-आकार कोहेन-प्रकार की शक्ति-गणना से तय हो [30]।

चरण 7: खुला डेटा और पुनरुत्पादन। डेटा और विश्लेषण-कोड सार्वजनिक हों, और स्वतंत्र दल इसे दोहरा सकें।

चरण 8: नैतिक सुरक्षा। प्रतिभागियों की गोपनीयता, सूचित सहमति और परीक्षण-परिणाम के सामाजिक प्रभाव पर विचार हो [24]।

चरण 9: रिपोर्टिंग। समीक्षा-घटक PRISMA 2020 और PRISMA-ScR की चेकलिस्ट [21,22] के अनुसार रिपोर्ट किया जाए, और प्रकाशन-पूर्व मौलिकता-जाँच हो [23]।

10. निष्कर्ष

इस शोध-पत्र ने जन्मपत्री-निर्माण और नक्षत्र-चरण आधारित भविष्यकथन की सटीकता का परीक्षण दो अलग स्तरों पर किया। गणितीय और मापन-स्तर पर यह दिखा कि चरण और नवांश जैसे सूक्ष्म वर्गीकरण जन्म-समय की व्यावहारिक त्रुटियों के प्रति अत्यंत संवेदनशील हैं। ± 15 मिनट की त्रुटि पर लग्न-नवांश लगभग 54% मामलों में और ± 5 मिनट पर लगभग 19% मामलों में बदल जाता है। चंद्र-चरण अपेक्षाकृत स्थिर है, पर विंशोत्तरी दशा का आरंभ-समय प्रति घंटे की त्रुटि पर लगभग 3 से 10 माह खिसकता है। पूर्वानुमान-वैधता के स्तर पर, समीक्षित नियंत्रित अध्ययनों में [13–18] सटीकता संयोग-स्तर से सार्थक रूप से ऊपर नहीं मिली। जहाँ छोटे सहसंबंध दिखे, उन्हें स्व-आरोपण जैसी सामाजिक-मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं से समझाया गया [19,20]।

इसके साथ यह भी दर्ज होना चाहिए कि इस पत्र का निष्कर्ष एक सीमित दावा है। वह यह नहीं कहता कि हर संभव ज्योतिषीय दावा असिद्ध हो चुका है। वह यह कहता है कि परखे गए दावों के पक्ष में नियंत्रित साक्ष्य उपलब्ध नहीं है, और नक्षत्र-चरण स्तर की सूक्ष्मता पर विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए बड़े भारतीय परीक्षण अब भी अपेक्षित हैं। परंपरा का सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्य अलग प्रश्न है, और उसके लिए अलग अनुसंधान-ढाँचा चाहिए [8–10]।

अंततः दृष्टि-संतुलन का सूत्र वही है जो शास्त्र स्वयं देता है। दैव और पुरुषकार, दोनों पहियों की चर्चा के साथ रथ को चलाने वाला पहिया पुरुषकार ही है [31]। जो विधि स्वयं को "शास्त्र" कहती है, उसे अपने दावों को प्रत्यक्ष-जाँच के लिए खोलने में संकोच नहीं होना चाहिए। गणित के प्रति वेदांग-ज्योतिष का वही सम्मान [1] यहाँ भी मार्गदर्शक रहे: जहाँ गणना है, वहाँ परीक्षण संभव है, और जहाँ परीक्षण संभव है, वहीं ज्ञान की प्रगति है।

संदर्भ

1. Kuppanna Sastry TS. Vedanga Jyotisha of Lagadha. New Delhi: Indian National Science Academy; 1985.
2. Keith AB, translator. The Veda of the Black Yajus School entitled Taittiriya Sanhita. Cambridge (MA): Harvard University Press; 1914.
3. Pingree D. From astral omens to astrology, from Babylon to Bikaner. Rome: Istituto Italiano per l'Africa e l'Oriente; 1997.
4. Pingree D. Jyotiḥśāstra: astral and mathematical literature. Wiesbaden: Otto Harrassowitz; 1981.
5. Burgess E, translator. Translation of the Surya-Siddhanta, a text-book of Hindu astronomy. J Am Orient Soc. 1858;6:141-498.
6. Varāhamihira. Bṛhājātaaka. [Sanskrit text with English translation]. † संस्करण-विवरण जोड़ें.
7. Santhanam R, translator. Brihat Parasara Hora Sastra. New Delhi: Ranjan Publications; 1984. †
8. Ahluwalia PS. भाषा, संस्कार और संस्कृति का समाजशास्त्रीय विश्लेषण. शब्दसागर. 2023;35-41.
9. Ahluwalia PS. संस्कार और संस्कृति: समाजशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन. शब्दसागर. 2023;17-25.

10. Ahluwalia PS. भाषा और संस्कृति के विकास में संस्कारों का महत्व: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. शब्दसागर. 2024;1-8.
11. Popper KR. The logic of scientific discovery. London: Hutchinson; 1959.
12. Thagard PR. Why astrology is a pseudoscience. PSA Proc Bienn Meet Philos Sci Assoc. 1978;1978(1):223-34.
13. Carlson S. A double-blind test of astrology. Nature. 1985;318(6045):419-25.
14. Dean G, Kelly IW. Is astrology relevant to consciousness and psi? J Conscious Stud. 2003;10(6-7):175-98.
15. Narlikar JV, Dabholkar N, et al. A statistical test of astrology. Curr Sci. 2009;96(5). †
16. Hartmann P, Reuter M, Nyborg H. The relationship between date of birth and individual differences in personality and general intelligence: a large-scale study. Pers Individ Dif. 2006;40(7):1349-62.
17. Voas D. Ten million marriages: an astrological detective story. Skeptical Inquirer. 2008;32(2):52-5.
18. Kelly IW. Modern astrology: a critique. Psychol Rep. 1997;81(2):931-62.
19. Mayo J, White O, Eysenck HJ. An empirical study of the relation between astrological factors and personality. J Soc Psychol. 1978;105(2):229-36.
20. Clarke D, Gabriels T, Barnes J. Astrological signs as determinants of extroversion and emotionality: an empirical study. J Psychol. 1996;130(2):447-56. †
21. Page MJ, McKenzie JE, Bossuyt PM, Boutron I, Hoffmann TC, Mulrow CD, et al. The PRISMA 2020 statement: an updated guideline for reporting systematic reviews. BMJ. 2021;372:n71.
22. Tricco AC, Lillie E, Zarin W, O'Brien KK, Colquhoun H, Levac D, et al. PRISMA extension for scoping reviews (PRISMA-ScR): checklist and explanation. Ann Intern Med. 2018;169(7):467-73.
23. Ahluwalia PS. Plagiarism: detection techniques and tools. Siddhanta's Int J Adv Res Arts Humanit. 2024;1-11.
24. Ahluwalia PS. Ethical issues in social science research. Shodh Patra: Int J Multidiscip Stud. 2024;1-8.
25. Forer BR. The fallacy of personal validation: a classroom demonstration of gullibility. J Abnorm Soc Psychol. 1949;44(1):118-23.
26. Dickson DH, Kelly IW. The "Barnum effect" in personality assessment: a review of the literature. Psychol Rep. 1985;57(2):367-82.
27. Tversky A, Kahneman D. Judgment under uncertainty: heuristics and biases. Science. 1974;185(4157):1124-31.
28. Tetlock PE. Expert political judgment: how good is it? How can we know? Princeton (NJ): Princeton University Press; 2005.
29. Brier GW. Verification of forecasts expressed in terms of probability. Mon Weather Rev. 1950;78(1):1-3.
30. Cohen J. Statistical power analysis for the behavioral sciences. 2nd ed. Hillsdale (NJ): Lawrence Erlbaum Associates; 1988.
31. Radhakrishnan S, translator. The Bhagavadgītā. London: George Allen & Unwin; 1948.

32. Ahluwalia PS. गांधी जी के जीवन मूल्य और वर्तमान समय में उनकी प्रासंगिकता. शब्दसागर. 2024:6-17.
33. Ahluwalia PS. गांधी जी की शिक्षा नीति: नैतिकता और जीवन कौशल के विशेष संदर्भ में. शब्दसागर. 2024:9-16.
34. Ahluwalia PS. NAAC reforms and Indian education system: an empirical study on implementation challenges and opportunities. Siddhanta's Int J Adv Res Arts Humanit. 2024:84-108.
35. Ahluwalia PS. NAAC's quality indicators and Indian higher education: a comparative analysis of best practices and challenges. Siddhanta's Int J Adv Res Arts Humanit. 2024:38-66.
36. Ahluwalia PS. Strategic implications of NAAC's outcome-based education approach on Indian higher education: a case study. Siddhanta's Int J Adv Res Arts Humanit. 2024:95-123.
37. Ahluwalia PS. Enhancing quality assurance in Indian higher education: a critical analysis of NAAC's role and impact. Siddhanta's Int J Adv Res Arts Humanit. 2024:193-210.
38. Ahluwalia PS. Assessing the effectiveness of NAAC accreditation in improving academic excellence in Indian higher education institutions. Siddhanta's Int J Adv Res Arts Humanit. 2024:146-59.
39. Ahluwalia PS. Strategic planning for NAAC accreditation: a roadmap for Indian higher education institutions to achieve excellence. Siddhanta's Int J Adv Res Arts Humanit. 2023:44-69.
40. Ahluwalia PS. NAAC's role in promoting research and innovation: a comparative analysis of Indian universities. Siddhanta's Int J Adv Res Arts Humanit. 2023:47-70.
41. Ahluwalia PS. Improving student learning outcomes through NAAC's assessment and accreditation process: a case study of Indian colleges. Siddhanta's Int J Adv Res Arts Humanit. 2023:25-40.